# आधुनिक जीवन में कामकाजी नारी की दोहरी भूमिका

डॉ.राजश्री पी. मोरे
हिंदी विभागाध्यक्ष
उस्मानिया महिला विश्वविद्यालय, ओ.यू.
9246245657
rajshreebk@gmail.com

प्राचीन काल से ही नारी को शिक्षा से वंचित रखा गया है । हजारों वर्षों तक पुरुषों की दासी के रूप में अपना जीवन बिताया । इसलिए स्त्रियों का उस रूप से मानसिक विकास नहीं पाया । कुछ देशों में तो स्त्रियों को जड़ पदार्थ ही माना जाता है । हमारे भारतीय समाज में धर्म की व्यवस्स्था इस प्रकार है कि वहां पर नारी के बिना कोई भी धार्मिक कार्य पूरा हो ही नहीं सकता । मनु महाराज ने एक ओर तो नारी की महिमा की है और कहा कि जिस स्थान पर नारी की पूजा होती है वहां पर देवताओं का वास होता है । और दूसरी ओर उसे गुलामी के बंधन में बांध डाला । शतपथ ब्राह्मण में नारी को पुरुषों के समान माना गया है ।

मुग़ल काल में नारी को बुरखे में रखा गया है । उसकी आज़ादी पर बंधन डाले गए । नवजागरण काल के बाद उसमें परिवर्तन देखने को मिलता है ।वैदिक युग में नर – नारी को सामान अधिकार प्राप्त था । वे वेदों और शास्त्रों का अध्ययन कर सकती थी । गुरुकुल में जाकर शिक्षा प्राप्त करने का उसे अधिकार था । उत्तर वैदिक काल में उसे अपना पति स्वयं चुनने का अधिकार प्राप्त था । बौद्धिक स्तर पर नारी पुरुषों से कम भी नहीं थी । परन्तु धीरे –धीरे सहयोगिनी के महान पद से वह दासी के निम्न स्तर पर पहुँच गयी । बहु पत्नी प्रथा , सती प्रथा ,बाल विवाह आदि ने नारी के जीवन को नरकमय बना डाला । रामायण काल में उसे फिर से सम्मान प्राप्त हुआ । महाभारत काल में द्रौपदी पर दांव लगा दिया गया । शिक्षा की कमी के कारण स्त्रियों का धार्मिक एवं सामाजिक स्तर नीचा होता चला गया ।

समाज सुधारकों द्वारा किये गए आन्दोलनों के कारण नारी की स्थिति में कुछ परिवर्तन आया । राजाराम मोहन राय ने सर्वप्रथम बहुपत्नीत्व प्रथा का विरोध किया और विधवा विवाह की मांग की । सती प्रथा का घोर विरोध किया । बाल - विवाह एवं दहेज़ प्रथा का भी खुल कर विरोध किया । महादेव रानडे जी ने नारी शिक्षा के लिए पाठशालाएं खोलीं और विधवा आश्रमों की स्थापना की ।

शिक्षा के बल पर आज की नारी चार दिवारी की कैद से बाहर निकल चुकी है । परन्तु आज भी समाज में उसकी उपेक्षा ज्यों की त्यों ही है । कानून चाहे उसके पक्ष में कितना भी प्रबल क्यों ना हो अपहरण , बलात्कार , हत्याओं ,तलाक , आत्महत्याओं आदि में अप्रत्याशित वृद्धि देखने को मिलती है । महानगरों में भले ही परिवर्त्तन आया

हो परन्तु गाँव में रहने वाली एवं आदिवासी स्त्रियों की स्थिति में कुछ ज्यादा अंतर देखने को नहीं मिला है । शासन तथा न्याय से उसे समाज में सम्मान तो मिला है परन्तु उसकी सामाजिक स्थिती उतनी संतोषजनक नहीं है । मध्यवर्गीय परिवार के रहन – सहन को बनाये रखने हेतु

उसका काम करना अनिवार्य है । पत्नीत्त्व , मातृत्त्व निभाते हुए अर्थार्जन करना उतना आसान नहीं है । बाहरी परिस्थितियों का सामना करते हुए घर को सम्भालना इतना आसान कार्य नहीं ।

## कामकाजी नारी की परिभाषा

कामकाजी नारी के विषय में डॉ. प्रमिला कपूर का कथन इस प्रकार है – " यह शब्द उन स्त्रियों के लिए प्रयुक्त हुआ है , जो वेतनवाले कामधंधों में लगी हैं , उनके लिए नहीं जो समाज – सेवा में रत हैं या अवैतनिक रूप से काम कर रही है । " १

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् उच्च शिक्षा ग्रहण करने के बाद भारतीय नारी ने अपने उपार्जित ज्ञान से दूसरों को लाभान्वित करने के उद्देश्य से शिक्षा –विभाग में कार्य आरम्भ किया । जनसंख्या में वृद्धि , आवश्यकताओं की आपूर्ति , आधुनिक जीवन पद्धति की ओर आकर्षण एवं परिवार को चलाने की जिम्मेवारी आदि के कारण नारी कामकाज करने की प्रवृति की ओर अग्रसर हुई । " समाज में प्रतिष्ठित स्थान पाने , उच्च समाज के लोगों की भांति जीवन निर्वाह करने , अपनी संतान को सुरक्षित करने एवं पति की आर्थिक चिंता दूर करने के उद्देश्य से नारी ने नौकरी के व्यवसाय को अपनाया है । "२

कई बार नारी अपनी कठिनाइयों को किसी को बताना नहीं चाहती और किसी के सामने हाथ नहीं फैलाना चाहती है । ऐसी स्थिती में काम काजी बनना सर्वोत्तम है । " आर्थिक , सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों ने नारी को अर्थ प्राप्ति के लिए , सामाजिक सम्मान और नेतृत्व शक्ति की प्राप्ति के लिए ,गृहस्थ प्रबंध की समस्या से हटाकर कामकाजी बनने के लिए प्रोत्साहित किया है । " ३

## आर्थिक दबाव

आधुनिक समाज में इतना परिवर्तन हुआ है कि घर के बड़े –बूढ़े भी यही चाहते है कि उनके घर की बहू-बेटी परिवार की आमदनी में योगदान दें । यही कारण है कि

महिलाएं कई क्षेत्रों में पुरुषों के मुकाबले आगे आयी है और उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही हैं । समाज का शायद ही कोई ऐसा कोना शेष होगा जहाँ नारी ने अपने कदम ना रखे हों ।

" पुरुष के साथ –साथ भारतीय महिलाएं भी यह महसूस करने लगी हैं कि नारी के जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य केवल प्रेम -विवाह करने , पति के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहने , बच्चे को जन्म देने और गृहस्ती संभालने तक ही सीमित नहीं । वे अनुभव करने लगी हैं कि नारी- जीवन का उद्देश्य इससे कहीं ऊँचा एवं अधिक गंभीर है । कपड़ों से लदीफदी , सिमटी सकुचाई , मंद गतिवाली कोमालवदना नारी की छवि अब केवल कविताओं ,गीतों तक सिमट कर रह गयी है । अब जिस स्त्री से हमारा साक्षात्कार होता है , वह चुस्त , दुरुस्त , दिखनेवाली,मशीन की तरह तेज़ी से हाथ चलाती , घर के कामों को जल्दी निबटाती हुई और तेज़ कदमों से अपने गंतव्य की ओर आगे जाती हुई नारी है । " ४

स्त्री ने अपना कार्य क्षेत्र व्यापक कर लिया है । अपनी क्षमता की वृद्धि की है । परिवार में आर्थिक ढांचे को मजबूत किया है । आज सभी कामकाजी नारियां यह मानती है कि नौकरी उनकी जरुरत है , ना की शौक । नारी कोई मशीन नहीं है इसलिए पति और परिवार वालों को भी चाहिए कि वह छोटे-मोटे काम में उसकी मदद करें ।

## पारिवारिक दायित्व

आधुनिक भारतीय परिवार में विवाह के पश्चात् कोई भी नारी नौकरी नहीं छोड़ना चाहती है । क्योकि नौकरी करने की उसे एक आदत पड़ चुकी होती है । नौकरी से उन्हें मानसिक स्वतंत्रता , आर्थिक सबलता , व्यक्तिगत संतुष्टि आदि की प्राप्ति होती है । इन सभी की वे अभ्यस्त हो चुकी है । परिवार वालों को कभी यह नहीं लगता की नौकरी में कितनी थकान हो जाती है । उन्हें तो यही लगता है कि नौकरी के बहाने वे अपने मित्रों के साथ मौज उड़ाती है । उनकी दृष्टि में कामकाजी नारियां चरित्रहीन होती है और नौकरी करने के कारण स्वभाव से घमंडी और कर्कश प्रवृत्ति की होती जाती है ।

" कामकाजी नारी ने सामजिक सत्ता व सामाजिक बंधनों एवं रीतिरिवाजों को , स्वयं आत्मनिर्भर बनने तथा आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने की अपनी क्षमता की राह में सदा एक चुनौती माना था । वह संसार को यह सिद्ध करके दिखाना चाहती थी कि नारी भी आर्थिक स्वतंत्रता का दर्ज़ा ,नाम व प्रसिद्धि पाने में उतनी ही समर्थ है जितना कि पुरुष है ।" ५

## दाम्पत्य सम्बन्ध

विवाहित महिलाएं नौकरी इसलिए करती है क्योंकि उनके जीवन स्तर को बनाये रखने में उनके पति की आय पर्याप्त नहीं है । उनकी आय एक आरामदेह घर , भरपूर पौष्टिक भोजन , अच्छे कपड़े और बच्चों को पर्याप्त सुखमय जीवन देने में , बढ़िया शिक्षा व्यवस्था जुटाने में अपर्याप्त है । कार , टी.वी , फ्रिज जैसे आधुनिक सुविधाओं को जुटाने के लिए नारी को भी काम करना अनिवार्य है ।

" भारतीय नारी को आज बराबरी के कानून एवं राजनीतक अधिकार , शिक्षा प्राप्ति के नए अवसर , अपनी संकीर्ण सामाजिक परिधि और दृष्टिकोण को विस्तृत बनाने के अवसर ,तथा अपने गुणों की अभिव्यक्ति – विशेषकर आर्थिक स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति के अवसर मिलने से एक नया सामाजिक – आर्थिक दर्ज़ा प्राप्त हुआ है ।" ६

नौकरी पेशा महिलाओं को वही कार्य और वही माहोल चुनना चाहिए जो उसके व्यक्तित्व तथा परिवार के हित में हो । कामकाजी नारी के लिए अपने चारित्रिक पक्ष को पूर्णतः स्वच्छ रख पाना आज के समय में कठिन होता जा रहा है । कामकाजी नारी को अपने कार्यक्षेत्र की बात को कुछ हद तक नज़र अंदाज़ करके अपना काम करना पड़ता है । बढती महंगाई के कारण हर कोई अपने घर में कमाऊ बहू लाने के बारे में सोच रहा है । आधुनिक भारतीय परिवारों में लड़की को पढ़ा –लिखा कर नौकरी लगाने की होड़ बढती ही जा रही है । ससुराल वाले तो यही चाहते है कि वह घर और बहार दोनों जगह संभाले । समाज के बदलते हुए दृष्टिकोण ने नारी को घर की चार दीवारों से तो बहार निकाला है । किन्तु यह मुक्ति उसे महंगी पड़ रही है ।

शादी के बाद उसका सारा जीवन मशीन की तरह बनकर हर गया है । दफ्तर का काम , घर का काम , बच्चों की देखभाल , पति की उदासीनता , नीरस व्यवहार इन सबके कारण वह अन्दर ही अन्दर घुटने लगती है । क्या वह मात्र पैसे कमाने की मशीन है ? क्या उसका कोई अस्तित्व नहीं है ? हर जगह उसका शोषण ही शोषण होता है । सभी उससे उम्मीदें रखते है ,लेकिन कोई उसका दुख दर्द नहीं बांटता है ।

परिवार से जयादा समाज को किसी कामकाजी नारी की चिंता सताती है । वह क्यों नौकरी करती है ? कितने बजे घर से निकलती है ? उसका चरित्र कैसा है ? उसके सहकर्मियों के साथ उसका व्यवहार कैसा है? इन सारी बातों की जानकारी के लिए समाज के बड़े- बूढ़े सदा आँखें फाड़ें रहते है ।

## दोहरी भूमिका

कामकाजी नारी को अपने जीवन में दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है । कार्यालय में अपनी योग्यता के कारण उसे अधिक कार्य भार सौंपा जाता है और इधर घर पर सास,पति एवं संतान का कार्यभार भी उसे ही संभालना पड़ता है । संतान के पालन पोषण की जिम्मेदारी एक माँ से अच्छा भला कौन कर सकता है ? कामकाजी नारी के

पास समय नहीं होने के कारण वह संतान के पालन पोषण के लिए दूसरों पर निर्भर रहती है परिणामस्वरूप बालक का भविष्य में विद्रोही प्रवृत्ति का होना स्वाभाविक है ।

घर पर सास बहू से उसी प्रकार की अपेक्षाएं रखती है जैसे कि किसी ज़माने में उनकी सास की उनसे रही हो । बहू के वेतन पर नज़र रखना इस तरह का व्यव्हार बहु के मन में कुंठा की भावना पैदा करता है ।

पति जब कामकाजी नारी का चुनाव करता है तब वह ना उसका सौन्दर्य देखता है ना उसका स्वाभाव । उसे सिर्फ पत्नी का वेतन दिखाई देता है । वह अपनी सेवा ऐसे ही कराना चाहता है जैसे कि पुराने ज़माने में पत्नी पति की किया करती थी । बात –बात पर उसका अहम जागृत हो जाता है ।

"कामकाजी नारी को तलाक मिलना आसान है , किन्तु पुनर्विवाह की समस्या का समुचित समाधान नहीं । कारण सारी पवित्रता एवं नैतिकता का दायित्व नारी का ही है । नारी को लेकर नैतिकता के जो मानदंड हैं , वे आज भी बाबा आदम के ज़माने के है । "६

आज के युग की कामकाजी नारी का गणित अब पहले जैसा कच्चा नहीं रह गया है ।वह परिवार को तोड़ने नहीं बल्कि जोड़ने का कार्य करती है । 'सतीत्व' व 'पति-धर्म' को अच्छी तरह से जानती है । उसकी आचार संहिता लिखने के लिए किसी मनुमहराज की जरुरत नहीं है । उसका सौन्दर्य विधाता की देन है । नारी ने नौकरी के भ्रमजाल को तोड़ –मरोड़कर फेंक दिया है । वह आज आतंकमुक्त है । आज कामकाजी नारी के कामकाज के सम्बन्ध में अटकले लगाना कोई मायने नहीं रखता है ।

## सन्दर्भ


1. डॉ. प्रमिला कपूर – भारत में विवाह और कामकाजी महिलाएं , पृ. २४
2. नवं दशक की कहानियों में कामकाजी महिलाएं – डॉ. चौधरी वेदवती उर्फ़ सौ .लाडके वी.पी. , पृ.-११
3. नवं दशक की कहानियों में कामकाजी महिलाएं – डॉ. चौधरी वेदवती उर्फ़ सौ .लाडके वी.पी. पृ.-१२
4. नवं दशक की कहानियों में कामकाजी महिलाएं – डॉ. चौधरी वेदवती उर्फ़ सौ .लाडके वी.पी. , पृ. १३
5. नवं दशक की कहानियों में कामकाजी महिलाएं – डॉ. चौधरी वेदवती उर्फ़ सौ .लाडके वी.पी. पृ. १५
6. नवं दशक की कहानियों में कामकाजी महिलाएं – डॉ. चौधरी वेदवती उर्फ़ सौ .लाडके वी.पी. पृ .२२